International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

महान शिक्षाविद डॉ०0 राधाकृष्णन, डॉ0 जाकिर हुसैन एवं डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 विभा भारद्वाज,

प्राचार्या,

आर्य कन्या (पी0जी0) कालिज, हापुड़

Submitted: 05-02-2022 Revised: 18-02-2022 Accepted: 20-02-2022

सारांश –

आज जब देश स्वतन्त्र हो गया है, तब भी अनुशासनात्मक, अध्यापक का स्थान,उद्देश्य, शिक्षणविधि, पाठयक्रम, भाषा विकास, विद्यार्थी, तकनीकी शिक्षा आदि के सम्बन्ध में डॉ0 राधाकृष्णन, डॉ0 जाकिर हुसैन एवं डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के विचार वर्तमान परिस्थितियों में सही उतरते हैं। शिक्षकों के गिरते हुए आचार-विचार और मानसिक स्तर तथा छात्रों की अनुशासनहीनता और विचारों के प्रति ऐसे शिक्षा-शास्त्रियों के शैक्षिक उद्देश्यों का ध्यान अवश्य जाना चाहिए, अन्यथा सबल से सबल शिक्षादर्शन और अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रणाली भी अनुपयोगी होगी।

डॉ0 राधाकृष्णन, डॉ0 जाकिर हुसैन एवं डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम द्वारा प्रतिपादित पाठयक्रम समन्वित पाठ्यक्रम है। वे विज्ञान व आध्यात्म में समन्वय चाहते थे। वे तकनीकी विषयों के साथ-साथ साहित्य और कला की शिक्षा भी देना चाहते थे। तीनों ही मनीषी व्यवहारिक, जीवनोपयोगी और राष्ट्रोपयोगी पाठ्यक्रम पर बल देते थे। व्यवसायिक पाठ्यक्रम की महत्ता को तीनों ही शिक्षाविद स्वीकार करते थे।

मूल शब्द- महान शिक्षाविद, शौक्षिक उद्देश्यों, अध्ययन, पाठयक्रम, अनुशासन, शिक्षणविधि

प्रस्तावाना-

राधाकृष्णन ने शिक्षा को अत्यन्त व्यापक रूप में लिया था। उन्होंने शिक्षा को जीवन के लिए आवश्यक माना है लेकिन जीवन के आध्यात्मिक विकास पर अधिक बल दिया है। उनका कहना था कि जब हम किसी क्षेत्र में संघर्ष करते है तो सर्वप्रथम हमें शिक्षा की ही आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा ही मनुष्यों को भौतिक वातावरण की शक्तियों से संघर्ष करने के लिए समर्थ बनाती हैं जिससे वह निर्धनता को समृद्धि में बदल सके। शिक्षा ही व्यक्ति को आन्तरिक संघर्ष पर विजय प्राप्त करने के योग्य बनाती है। जिससे वह अपनी हीन प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर सके। वे शिक्षा को ज्ञान तथा कौशल के विकास के लिए ही आवश्यक नहीं मानते वरन् जीवनयापन की कला में दीक्षित करने के लिए भी अनिवार्य मानते हैं। उनके

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

अनुसार हम शिक्षक से सीखते हैं, स्वयं से सीखते हैं तथा जीवन और उनके अनुभवों से भी सीखते हैं।

जाकिर हुसैन के अनुसार ज्ञान शिक्षा का पर्याय नहीं है। ज्ञान, शिक्षा का पर्याय तभी हो सकता है, जब वह अनुभव तथा खोज पर आधारित हो। जैसा उन्होंने कहा भी है, शिक्षा को न तो दबाव डालकर आकार दिया जा सकता है न ही अंकित किया जा सकता है और न ही यह मशीनी यंत्रो का उत्पादन कर सकती है। वह तो व्यक्ति के विशिष्ट और स्वतन्त्र व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता करती है। इसलिये कोई भी शिक्षा संस्था स्वयं को एक सीमा के अन्दर ही रखती है। शिक्षा व्यक्तिगत मस्तिष्क की प्रक्रिया है जो सम्भवत्त: वास्तव में व्यक्ति का पूर्ण विश्वास करती है। उनके अनुसार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका कोई अन्त नहीं है, या तो स्वयं व्यक्तिगत शिक्षा है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका अन्त जीवन की समाप्ति पर ही होता है।

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार शिक्षा से मानव का व्यक्तित्व सम्पूर्ण, विनम्र और संसार के लिए उपयोगी बनता है। सही शिक्षा से मानवीय गरिमा, स्वाभिमान और विश्व बन्धुता में बढ़ोत्तरी होती है। ये गुण शिक्षा के आधार होते हैं। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में और व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है, जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहते हैं, उन सब पर वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से एन्साइक्लोपीडिया हैं जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधि के प्रत्येंक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा 24वीं सदी में दुनिया काफी सुन्दर हो जायेगी।

डॉ0 कलाम कहते हैं- "शिक्षा के सम्बन्ध में मेरा विचार यह है कि उसके द्वारा बच्चों की रचनात्मक-शक्ति विकसित की जानी चाहिए। शिक्षा का अर्थ है-- एक जाग्रत समाज की रचना। जाग्रत समाज के मुख्य अंग तीन है: एक, ऐसी शिक्षा प्रणाली जिसके निश्चित मूल्य हों। दो, धर्म का आध्यात्मिक शक्ति में परिवर्तन। तीन, आर्थिक विकास। स्कूल जाने का परिणाम यह होना चाहिए कि युवा ज्ञान आधारित समाज के अंग बने और स्वयं अपने विकास के साथ-2 राष्ट्रीय विकास में भी अपना योगदान करें।'

शिक्षा के उद्देश्य -

डॉ0 राधाकृष्णन ने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण में भौतिक दृष्टिकोण के स्थान पर आध्यात्मिक उन्नयन को प्रमुख स्थान दिया। उनके अनुसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-- ज्ञान का अर्जन, ज्ञान का रुपान्तरण, अर्न्तदृष्टि का विकास, आध्यात्मिक उन्नयन, चारित्रिक उन्माय, वैज्ञानिक मस्तिष्क का निर्माण, सच्ची धार्मिकता की भावना, लोकतन्त्र का संरक्षण, राष्ट्रवाद की भावना, विश्वबन्धुत्व की भावना।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना है। ज्ञान के बिना तो आध्यात्मिक विकास हो सकता है और न ही विवेक प्राप्ति हो सकती है। इसी ज्ञान के लिए विज्ञान, कला, साहित्य और दर्शन आदि का अध्ययन किया जाता है। इस सन्दर्भ में विशेष बात जो राधाकृष्णन ने कही है वह यह है कि शिक्षा का उददेश्य केवल ज्ञान देना नहीं है वरन् और अधिक ज्ञान प्राप्त करने की प्यास बालकों के अन्दर उत्पन्न करती है वे कहते हैं कि हमें उनके अन्दर ज्ञान के सवंर्द्धन के लिए उत्साह पैदा करना चाहिए। वे यह भी कहते हैं कि ज्ञान के रुपान्तरण के पश्चात ही ज्ञान प्राप्ति का उददेश्य सफल होता है।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

राधाकृष्णन के अनुसार जीवन में वास्तविक सुख और शान्ति आध्यात्मिक विकास से ही सम्भव है।" अतः शिक्षा का उद्देश्य आध्यात्मिक विकास होना चाहिये। उनके शब्दों में "शिक्षा का उद्देश्य है, हमारे व्यक्तित्व और अस्तित्व को सार्थक बनाना और ऐसी शक्ति प्रदान करना जिसमें, हम आध्यात्मिक जड़ता को समाप्त कर सकें और आध्यात्मिक संवेदना को सुदृढ कर सकें।

चारित्रिक उन्नयन को राधाकृष्णन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उददेश्य मानते हैं। उनके अनुसार चरित्र के बिना किसी भी प्रकार की उन्नति नहीं हो सकती। उन्हीं के शब्दों में चरित्र ही प्रारब्ध है। चरित्र के द्वारा राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता है। जिस देश के देशवासियों का चरित्र नीचा होता है, वह देश कभी भी महान नहीं हो सकता। यदि हम एक महान राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें अधिक संख्या में युवक-युवतियों को इस प्रकार शिक्षित करना होगा कि उनमें चरित्र का बल हो।

डॉ0 जाकिर हुसैन ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बतायें हैं- चरित्र का निर्माण, आध्यात्मिक उन्नयन, सांस्कृतिक विकास, सामाजिक दायित्व की भावना का विकास, जीविकोपार्जन का उद्देश्य और राष्ट्रीयता का विकास।

जाकिर हुसैन के अनुसार चरित्र का निर्माण शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। दृष्टिकोण से मनुष्य एक नैतिक प्राणी है और उसकी शिक्षा में आवश्यक मानव मूल्यों का विकास होना चाहिये। यथा- सही दृष्टिकोण का विकास नीतियुकत व्यवहार एवं अच्छी आदतों का निर्माण। जाकिर हुसैन के अनुसार एक चरित्रवान व्यक्ति को दृढ़ इच्छा शक्ति रखनी चाहिये। मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों से विचलित न होकर अपने निर्णय में डटा रहना चाहिए क्योंकि एक व्यक्ति जिसमें इच्छा शक्ति की कमी होती है वह उचित दृढ़ और साहसी निर्णय नहीं ले सकता।

जाकिर हुसैन के दृष्टिकोण में चरित्र निर्माण में व्यक्ति का दृष्टिकोण भी सम्मिलित है। वह विश्वास करते हैं कि समाज के विपरीत दृष्टिकोण भी सन्तुलित चरित्र के निर्माण में बाधक है। उनके अनुसार एक चरित्रवान व्यक्ति को मनुष्य और वस्तुओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये तथा उसके अन्दर संवेगात्मकता भी होनी चाहिये जो केवल निरीक्षण और चिन्तन के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास है।" उनके अनुसार अच्छी शिक्षा का औचित्य मानव जाति को समृद्ध करना और उसकी आध्यात्मिक क्षमताओं का पूर्ण विकास करना है। वह भारतीय परम्पराओं और आदर्शो के प्रति अपनी अर्न्तदृष्टि रखते थे। उनके मतानुसार शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के अन्दर सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् जैसे मूल्यों का विकास करना है।

डॉ0 अब्दुल कलाम के अनुसार "शिक्षा का उद्देश्य रोजगार का सृजन होना चाहिए, न कि बेरोजगारी की संख्या बढ़ाना। प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए कि बच्चों की रचना शक्ति की बढ़ोत्तरी। सेकेंडरी शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए बच्चों में ऐसा आत्मविश्वास उत्पन्न करना कि वे अपना स्वयं का कोई छोटा उद्योग खड़ा कर सकें या उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में प्रवेश कर सके। या उच्चशिक्षा के संस्थान विश्वस्तरीय होने चाहिए जो उद्योग जगत के साथ मिलकर कार्य करें।" इसके साथ-साथ डॉ अब्दुल कलाम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा के उद्देश्य एवं महत्व को समझाया है।

हालांकि अक्षर-अंक ज्ञान होना किसी नागरिक के लिए अनिवार्य है, फिर भी सिर्फ- इसी की बदौलत लाभकारी रोजगार मिलना संभव नहीं। जिन लोगो ने केवल हाईस्कूल तक पढ़ाई

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

की है उनमें सही और आर्थिक रूप से उपयोगी हुनर का होना जरूरी है। देश में ऐसे नौजवानों की काफी बड़ी तादाद है। उन्हें रोजगार पाने या अपना कारोबार शुरू करने के लिए प्रशिक्षित किये जाने की आवश्यकता हैं। उन्हें विनिर्माण, मरम्मत होटल, स्वास्थ्य सेवा, फूटकर कारोबार या फिर इलेक्ट्रिशियन, बढ़ई के कार्य में प्रशिक्षित किया जा सकता है। आधुनिक प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में स्तरीय हुनर की आवश्यकता है और हमारा दायित्व है कि हम अपने नागरिकों को ऐसे हुनर में होशियार बनाएँ।

पाठ्यक्रम –

राधाकृष्णन एकीकृत पाठ्यक्रम के समर्थक हैं। यह विज्ञान और आध्यात्म में समन्वय चाहते हैं। इसलिये वे तकनीकी विषयों के साथ-साथ मानवीय विषय को भी महत्व देते हैं। उनके अनुसार किसी एक पक्ष का विशिष्ट ज्ञान देने से मानव के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास सम्भव नहीं है। वैज्ञानिक विषय मानव की शक्ति को बढ़ाते हैं और मानवीय विषय उसमें मानवीय गुणों का संचार करते हैं। मानवता के अभाव में शक्ति विनाशकारी हो जाती है। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में कहा गया है कि जो व्यक्ति इस आधुनिक जगत में बुद्धिमतापूर्वक रहने की इच्छा रखता है, उसे तीन क्षेत्रों का ज्ञान होना चाहिये। ये क्षेत्र हैं- 4. विज्ञान और तकनीकी, सामाजिक अध्ययन तथा 3. मानविकी, जिसमें भाषा और साहित्य, ललित कलाएं, नीतिशास्त्र, दर्शन और धर्म सम्मिलित है।

विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम की रूपरेखा –

राधाकृष्णन के अनुसार प्राथमिक, माध्यमिक, स्नातक और स्नातकोत्तर स्तरों परपाठयक्रम की रूपरेखा इस प्रकार है –

प्राथमिक स्तर –

राधाकृष्णन के अनुसार बालक देश का भविष्य है। इसलिए बालकों के अन्दर सरलता, सज्जनता, सच्चाई, ईमानदारी, सहयोग, निष्ठा, दयालुता, परोपकार, दूसरों की सहायता, दूसरों का सम्मान, एकता, राष्ट्र के प्रति प्रेम और त्याग आदि गुणों को उत्पन्न किया जाना चाहिये। राधाकृष्णन प्राथमिक स्तर पर बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम को उपयुक्त मानते हैं। वे बुनियादी शिक्षा की प्रशंसा करते हुए कहते है कि यह शिक्षा छात्रों का दैनिक जीवन से सम्पर्क स्थापित कराती है।

माध्यमिक स्तर –

माध्यमिक स्तर पर निम्नलिखित विषय सम्मिलित किये जाने चाहिये। 1- मातृभाषा,2- संघीय भाषा या एक प्राच्य भाषा अथवा जिनकी मातृभाषा संघीय भाषा हो, उनके आधुनिक भारतीय भाषा, 3- अंग्रेजी, 4- प्रारम्भिक गणित, 5- सामान्य विज्ञान, 6- सामाजिक अध्ययन तथा 7-निम्नलिखित विषयों में कोई दो विषय- (क). प्राच्य भाषा, 2- आधुनिक भारतीय भाषा, 3-- गणित, 4- भौतिकी, 5-रसायन, 6-जीव विज्ञान, 7- इतिहास,8- संगीत, 9-शिल्प, 10-चित्रकला, 11-बुक कीपिंग, 12- कृषि, 13-टाईप राइंटिंग, 14 गृह विज्ञान तथा 15- वाणिज्य।

स्नातक स्तर –

स्नातक की उपाधि प्राप्त करने की अवधि तीन वर्ष हो और स्नातकोत्तर उपाधि आनर्स कोर्स के एक वर्ष पश्चात तथा स्नातक बनने के दो वर्ष उपरान्त प्रदान की जाये। स्नातक की परीक्षा में चार विषयों की व्यवस्था की जाये जिनमें संघीय भाषा तथा प्राच्य भाषा या जिनकी मातृभाषा हो उनके लिए आधुनिक भारतीय भाषा और अंग्रेजी विषय अनिवार्य हों तथा कला के अन्तर्गत दो विशेष विषय और लिये जायें।

डॉ0 जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों को प्रत्यक्ष रूप से कार्यान्वित करने का साधन है पाठ्यक्रम। पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों का मूर्त रूप है। अध्ययन और अध्यापन प्रक्रिया

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

में शिक्षक और शिक्षार्थी महत्वपूर्ण घटक हैं। शिक्षार्थियों को किस प्रकार अध्ययन करना है और शिक्षकों को क्या सिखाना है। इन दोंनो के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम शिक्षक को यह बताता है कि कक्षा विशेष को क्या और कितना पढ़ाना है। इस जानकारी को प्राप्त करके ही शिक्षक अपने विषय को पढ़ाने की तैयारी करता है। शिक्षकों की तरह शिक्षार्थियों को भी पाठ्यक्रम से इस बात का पता चलता है कि उन्हें क्या पढ़ना है और कितना पढ़ना है? इस प्रकार पाठ्यक्रम शिक्षा का अभिन्न अंग है। शिक्षा के अमूर्त उद्देश्य पाठ्यक्रम के माध्यम से ही मूर्त रूप धारण करते हैं। इसीलिये शिक्षक की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का बहुत महत्व है।

डा0 जाकिर हुसैन का कहना था कि पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल व्यक्ति की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना ही नहीं वरन् राष्ट्रीय आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और आकाक्षाओं की पूर्ति करना भी है। उन्होंने इस बिन्दु पर विशेष बल दिया क्योंकि वह यह मानते थे कि पराधीन भारत में अंग्रेजी शिक्षा राष्ट्रीय हितों के लिए अनुपयुक्त थी। इस अंग्रेजी शिक्षा के उद्देश्य संकुचित और कठोर थे इसका पाठ्यक्रम दुर्बल था और उसका राष्ट्रीय जीवन की आवश्यकताओं और आंकाक्षाओं से कोई सम्बन्ध नहीं था। इसका उद्देश्य केवल बाबू पैदा करना था। उनका विश्वास था कि किसी राष्ट्र का पाठयक्रम उस राष्ट्र की आत्मा और आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिये। डा0 जाकिर हुसैन के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण सम्बन्धी सिद्धान्त इस प्रकार है :- वैयक्तिकता का सिद्धान्त, निरन्तरता का सिद्धान्त, सम्पूर्णता का सिद्धान्त, सामाजिकता का सिद्धान्त, सह सम्बन्ध का सिद्धान्त, क्रियाशीलता का सम्बन्ध और मानवीय मूल्यों के विकास का सिद्धान्त ।

डॉ0 कलाम न केवल विज्ञान को पाठ्यक्रम में अपितु चिकित्सा, नर्सरी, कम्प्यूटर, आभियान्त्रिकी, विधि और साहित्य इतिहास व दर्शनशास्त्र के अध्ययन को भी छात्रों के पाठ्यक्रम में शामिल करना चाहते थे। उन्होंने माना है कि पाठ्यक्रम का हमारी तकनीकियों, सामाजिक, आर्थिक व्यवसायिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना चाहिए।

शिक्षण विधियाँ -

राधाकृष्णन ने शिक्षण प्रक्रिया को भी तीन प्रकार का बताया"-

1- ज्ञानात्मक- इसके अन्तर्गत श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन को स्थान प्रदान किया जाता है।

2- भावात्मक- इसमें अनुभूति पर बल दिया जाता है जो शिक्षार्थी प्रकृति से भावना प्रधान होते हैं। उनके लिए तर्क आदि पर आधारित विधि अधिक प्रभावी नहीं होती। इन शिक्षार्थियों में प्रेम, दया, कोमलता आदि के गुण प्रमुखता के लिए हुये होते हैं।

3- कार्यात्मक- क्रिया प्रधान विषयों की शिक्षा के लिये इस विधि को उपयुक्त बताया है। कार्य के द्वारा ज्ञान को शीघ्रता से अधिगम किया जा सकता है। "करके सीखना" की विधि इस प्रकार के विद्यार्थियों के लिये लाभकारी होती है। व्यक्तिगत कर्म के कारण हैं और मनुष्य का शारीरिक संगठन एक कार्य करने वाला यंत्र-समुच्चय है। डॉ0 जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों के आधार पर निम्नलिखित शिक्षण विधियाँ सामने आती हैं, जिसका समय-समय पर उन्होंने समर्थन किया है।

कार्य पद्धति -

डॉ0 जाकिर हुसैन के अनुसार बालक की प्रगति तभी सम्भव हैं जब मस्तिष्क और हाथ साथ-साथ चलते रहे। यह वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि किसी बात को कार्य करके समझा जाये और समझी गयी बात के आधार पर कार्य करने का प्रयास किया जाये। यह कार्य पद्धति सर्वोत्तम है।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

मनोवैज्ञानिक पद्धति –

डॉ0 जाकिर हुसैन के अनुसार कार्य पद्धति के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक पद्धति का सहारा लेना चाहिये। बालको को उनके स्वभाव के अनुसार कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहियें। उनके मस्तिष्क को पहचानकर ही यह कार्य हो सकता है।

प्रयोजना प्रणाली –

डॉ0 जाकिर हुसैन को पूर्ण विश्वास था कि सच्ची शिक्षा केवल कार्य करके ही दी जा सकती है। कई शिक्षाविदों ने इसे अपनी शिक्षा के कार्य में महत्वपूर्ण बिन्दु पर रखा है। अतः: डॉ0 जाकिर हुसैन के अनुसार, "बच्चों को विभिन्न विषयों की शिक्षा हाथ के काम के जरिये ही दी जा सकती है- भले ही हम देहाती सभ्यता के पक्ष में हों, या शहरी सभ्यता के। यही कारण है कि अनेक शिक्षाविद् हाथों से किये जाने वाले किसी न किसी काम को शिक्षा का केन्द्र बनाने की कोशिश करते रहें हैं।

स्वाध्याय विधि –

जाकिर हुसैन ने स्वाध्याय पर भी बल दिया है और स्वाध्याय में बालक अपने आप सीखता है तथा ज्ञानार्जन करता है, जैसे चित्रकला संगीत आदि विषयों को उन्होंने इसमें समाविष्ट किया क्योंकि इन्हें वह स्वयं के द्वारा सीखता है।

खेल विधि –

जाकिर हुसैन मानते है कि बच्चों को तरह-तरह के खेल द्वारा सिखाया जाना चाहिये इससे उनकी मांसपेशियों का विकास होता है।

सहसम्बन्ध विधि –

जाकिर हुसैन के अनुसार विभिन्न विषयों में आपस में सहसम्बन्ध स्थापित करके सिखाया जाना चाहिये जैसे सामाजिक अध्ययन में विभिन्न अन्य उपविषयों के बारे में जानकारी दी जा सकती है।

डॉ0 कलाम ने निम्नलिखित शिक्षण-विधियों को शिक्षण में महत्वपूर्ण बताया है-

प्रश्नोत्तर विधि –

डा0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम सलाह देते थे कि कक्षा में एक शिक्षक को कम से कम 20 मिनट प्रश्न पूछने पर खर्च करना चाहिए। प्रश्नों के माध्यम से बच्चों में स्पष्ट सोच उत्पन्न होती है। डॉ) कलाम कहते थे कि शिक्षकों द्वारा ऐसे प्रश्न पूछे जाने चाहिए जो चुनौतीपूर्ण हों और छात्र सोचने एवं उत्तर देने के लिए अनुकरण कर सकें।

वाद-विवाद विधि –

यह विधि शिक्षक एवं छात्रों के बीच अन्तः क्रिया पर जोर देती है। इस विधि की सफलता के लिए आवश्यक है कि छात्रों को अपने विचारों को खुलकर रखने की स्वत्तन्त्रता प्रदान करनी चाहिए। कलाम प्रत्येक सरल और जटिल समस्या को शिक्षक एवं छात्रों को आपसी समन्वय एवं सहयोग द्वारा हल करने पर बल देते हैं। डॉ0 कलाम छात्रों को खुले दिमाग से, वाद-विवाद एवं स्वतन्त्रता से अपने विचारों को प्रस्तुत करने पर भी बल देते हैं।

ट्यूटोरियल विधि –

डॉ0 कलाम अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षण एवं अधिगम के लिए टूयूटोरियल (शिक्षण सम्बन्धी) विधि का उत्साहपूर्ण समर्थन करते हैं तथा इसके पक्ष में वे कहते हैं कि ट्यूटोरियल एवं विशेष परीक्षण छात्रों में विभिन्न प्रकार की क्षमताएं विकसित करने के लिए आवश्यक है।

प्रयोग विधि –

डॉ0 कलाम कहते थे कि विज्ञान एक आकर्षक विषय है और एक वैज्ञानिक के लिए यह

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

जीवन पर्यन्त मिशन है। विज्ञान में स्वामित्व प्राप्त के लिए गणित की समझ आवश्यक है। गणित के साथ विज्ञान का समन्वय चमकदार होता है। अतः डॉ0 कलाम प्रयोग विधि का समर्थन शिक्षण में महत्वपूर्ण मानते हैं और कहते हैं कि प्रयोगों एवं सिद्धान्तों के सम्मिश्रण की आवश्यकता है।

शिक्षक –

राधाकृष्णन ने भी शिक्षक को अत्याधिक उच्च और गरिमापूर्ण स्थान दिया और समाज में उसकी भूमिका को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना। उन्होंने कहा कि 'विशाल भवन और साधन किसी महान शिक्षक को स्थानापनन नहीं कर सकते। उनका कथन है कि हम किस प्रकार की शिक्षा अपने युवकों को दे सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस प्रकार के शिक्षक प्राप्त कर सकते हैं। वे मानते हैं कि शिक्षक ही बौद्धिक परम्पराओं और प्राविधिक कौशलों को एक सन्तति से दूसरी सन्तति को हस्तान्तरित करता है, वही सभ्यता के दीप को प्रज्जवलित रखता है। जिस राष्ट्र ने शिक्षक के महत्व को नहीं समझा उनके लिए भविष्य की कोई आशा नहीं है।

डॉ0 जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का सूत्रधार है। शिक्षक वह केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों ओर शिक्षार्थी शिक्षण पद्धति, शिक्षण व्यवस्था पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, विद्यालय व्यवस्था घूमती है तथा वह अपनी ज्ञान ज्योति से सबको आलोकित करता है। शिक्षक उस ज्ञान ज्योति के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को ज्ञान का प्रकाश देता है। डॉ0 जाकिर हुसैन की दृष्टि में शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार शिक्षक बालक के व्यक्तित्व का समुचित विकास करता है, उसे स्वयं शिक्षा के लिये प्रेरित करता है और आवश्यकतानुसार दिशा-निर्देश करता है। बालक को ओर ये जब सारी दुनिया निराश हो जाती है तो बस दो व्यक्ति ऐसे हैं जिनके मन में अन्त तक आशा बनी रहती है।

एक उसकी माँ और दूसरा उसका शिक्षक।

डॉ0 कलाम कहते हैं कि- "मैं मानता हूँ कि दुनिया में समाज के लिए शिक्षक सेअधिक महत्वपूर्ण दायित्व किसी अन्य का नहीं है।"

शिक्षक देश की रीढ़ होते हैं। वे ऐसे स्तम्भ होते हैं जिनके बल पर सभी प्रकार की आंकाक्षाएँ साकार होती हैं। एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। उसे शिक्षण एवं बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक बाते पढ़ानी चाहिए, बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरायत एवं सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करें कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें।

शिक्षार्थी –

राधाकृष्णन शिक्षार्थियों से अनेक आशाएं और अपेक्षाएं रखते हैं जिनमें मुख्य निम्न प्रकार हैं – –

1- शिक्षार्थी को ज्ञान पिपासु होना चाहिए और शिक्षा प्राप्त करने के लिए पूर्ण समर्पित होना चाहिये।

2- शिक्षार्थी को जितेन्द्रीय होना चाहिये।

3- शिक्षार्थी को विवेकशील होना चाहिये।

4- .शिक्षार्थी को आत्म संयमी और निष्कामी विवेकशील होना चाहिये।

5- शिक्षार्थी को अनुशासनप्रिय होना चाहिये।

6- शिक्षार्थी को सहनशील और धैर्यवान होना चाहिये।

7- शिक्षार्थी को लगनशील और उत्साही होना चाहिये।

8- शिक्षार्थी को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिये।

9- शिक्षार्थी में अपने शिक्षक के प्रति अपार श्रद्धा और पूर्ण विश्वास होना चाहिये।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

10- शिक्षार्थी को मत्यवादी होना चाहिये।
शिक्षार्थी को प्रेम, दया, और ईमानदारी, आज्ञापालन, विनम्नता, क्षमा, पवित्रता,सच्चरित्रता, कर्तव्यनिष्ठा और त्याग आदि गुणों से परिपूर्ण होना चाहिये।

जाकिर हुसैन के अनुसार शिक्षार्थी में निम्नलिखित गुणों का होना अपेक्षित हैं --

1 शिक्षा्थी को अपने मन-मस्तिष्क को उदार तथा विशाल बनाना चाहिये। उसमें संकीर्णता नहीं होनी चाहिये। संकीर्णता से न कभी किसी व्यक्ति या राष्ट्र की उन्नतिहुयी है और न होगी।

2- शिक्षार्थी में देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी होनी चाहिये। उसमें देश के प्रति त्याग, बलिदान और समर्पण की भावना होनी चाहिये।

3- शिक्षार्थी को सन्तुलित होना चाहिये। न तो उसके स्वभाव में अति आतुरता होनी चाहिये और न ही लापरवाही। उन्होंने कहा था कि अगर जोश में बहुत सा काम करने की आदत है और उसके बाद ढीले पड़ जाते हो तो शायद यह कठिन काम तुमसे न बन पड़ेगा।

4- शिक्षार्थी में आत्म विश्वास होना चाहिये। असफलताओं का सामना करने का उसमें साहस होना चाहिए।

5- शिक्षार्थी में आत्म नियन्त्रण का गुण होना चाहिये। उसमें अपने मन की इच्छाओं पर नियन्त्रण करने की शक्ति होनी चाहिये।

डॉ0 कलाम कहते थे - "एक छात्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण है -
उसकी अपनी ईमानदारी और दूसरों के प्रति संवेदनशील का भाव ये गुण आपको निस्संदेह एक आदर्श नागरिक बनने में मदद करेंगे।

छात्रों के लिए छः सूत्री शपथ -

* में अपनी पढ़ाई लगनपूर्वक करूँगा और उसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करूँगा।

*» मैं कम से कम पाँच पौधे लगाऊगाँ और उनके विकास के लिए देखरेख करता रहूँगा।

*» मैं अपने दुखी भाई-बहनों के दुःख को दूर करने के लिए लगातार प्रयास करता रहूँगा।

*» मैं एक तेजस्वी नागरिक बनने की दिशा में कार्य करूँगा और परिवार को सच्ची राह पर ले चलूँगा।

* में मानसिक और शारीरिक विकलांग व्यक्तियों का दोस्त बना रहूँगा और उन्हें आम लोगों जैसे सहज महसूस करने के लिए प्रयास करता रहूँगा।

*» में प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपने देश को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए ईमानदारी से परिश्रम करूँगा।

अनुशासन -

डॉ0 राधाकृष्णन ने अनुशासन शिक्षा व्यवस्था का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है। इसके अन्तर्गत वाहय व्यवहार, आन्तरिक, प्रेरणा, आत्म नियन्त्रण, आत्म संयम, विनय, कर्तव्य परायणता आदि सभी कुछ आ जाते हैं। अनुशासन का उद्देश्य शिक्षार्थी को ज्ञान शक्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं, आदतों, रूचियों मूल्यों और आदर्शो को प्राप्त करने में सहायता देना है जिससे शिक्षार्थी ही आदर्श नागरिक बनकर देश और समाज के विकास और उत्थान में सहायता दे सकते हैं।

जाकिर हुसैन के अनुसार सच्चा अनुशासन वह है जिसका पालन बालक स्वेच्छा से करता है। यदि बालक पर कोई अनुशासन प्रेम और सहिष्णुता से लादा जाता है तो वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है। इस प्रकार जाकिर हुसैन आत्मानुसाशन के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि शिक्षक उन्हें स्वयं शिक्षा तथा आत्मानुशासन हेतु बराबर प्रेरित करते रहें जाकिर हुसैन का कहना था कि सच्ची शिक्षा स्वतन्त्र वातावरण में ही हो सकती है। कठोर अनुशासन से बालक की प्रतिभा कुंठित होती है और उसमें मानसिक ग्रन्थियां उत्पन्न हो जाती है। इससे न वह ठीक प्रकार से शिक्षा प्राप्त कर पाता है और न ही अपने माता-पिता या शिक्षक की इच्छाओं को पूरा

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 4, Issue 2 Feb 2022, pp: 1114-1123 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

कर पाता है। इस प्रकार के अनुशासन के लिये स्वतन्त्रता आवश्यक है।

डा0 कलाम छात्रों में आत्म अनुशासन की भावना विकसित करना चाहते हैं।

अनुशासन के सम्बन्ध में उनके विचार इस प्रकार से हैं :-

* आत्म आनुशासन हमें संसारिक इच्छाओं द्वारा दूषित होने एवं भीषण आक्रमण से बचाव हेतु एक दुर्ग के रूप में कार्य करता है। अन्ततः आत्म-अनुशासित होने से बाध्य वातावरण का दुष्प्रभाव असफल रहता है।

० प्रेम, विश्वास और उत्तरदायित्व का विरोध होने पर भी आत्म-अनुशासन परिवार में खुशियाँ लाने में महत्वपूर्ण होता है।

० अनुशासन का अर्थ होता है कि हम सभी को दिन प्रतिदिन जीने के साथ-साथ ईमानदारी, वफादारी, और धैर्यपूर्णता के मूल्यों का अनुकरण करना चाहिए। हमें सकारात्मक सोत्र एकत्र करनी चाहिए कि हम देश के प्रति क्या कर रहे हैं और इसके साथ-साथ ही हमें अपने स्वयं के लिए भी लाभ प्राप्त होंगे।

» कठिन परिश्रम और अनुशासन के बिना जीवन की वास्तविकता कुछ नहीं है।

० अनुशासन की संवेदना उत्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है।

० डॉ0 कलाम सुझाव देते हैं कि माध्यमिक स्तर पर युवाओं को कम से कम 18 माह की एन0सीएसी0 का प्रशिक्षण राजनीति, व्यवसाय, ब्यूरोक्रेसी, वैज्ञानिक अनुसरण,खूलकूद आदि क्षेत्रो में अनुशासित रहेगा।

निष्कर्ष -

डॉ राधाकृष्णन, डॉ0 जाकिर हुसैन और डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक उद्देश्य सम्बन्धी विचार आज की परिस्थितियों में बहुत ही प्रासंगिक है। वे शिक्षा के द्वारा बालक का नैतिक और चारित्रिक विकास करना चाहते हैं। बालकों में स्वावलम्बन की भावना पैदा करना चाहते हैं। उन्हें आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। उनका सांस्कृतिक विकास करना चाहते हैं। उनमें मानवीय मूल्यों को विकसित करना चाहते हैं। उनमें सामाजिकता की भावना पैदा करना चाहते हैं। उनमें राष्ट्रीयता और अभन्तर्राष्ट्रीयता के भाव उत्पन्न करना चाहते हैं।

उनमें नेतृत्व के गुणों को विकसित करना चाहते हैं इस प्रकार ये तीनों शैक्षिक उद्देष्यों के द्वारा श्रेष्ठ मानव का निर्माण करना चाहते थे।

डॉ राधाकृष्णन, डॉ) जाकिर हुसैन और डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन के समालोचनात्मक अध्ययन के विवेचन से शोधकर्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँची हैं कि उनके चिंतन में वे सभी तत्व एवं सिद्धान्त विद्यमान है, जिनका प्रयोग करके हम अपनी शिक्षा का पुर्नगठन कर सकते हैं ये तत्व या सिद्धान्त भारत की वर्तमान परिस्थितियों की दृष्टि से सर्वथा उपयोगी तथा उपयुक्त है।

आज भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विचारकों और शिक्षकों के सामने जब अनुशासनहीनता, चरित्रहीनता, नैतिक एव आध्यात्मिक तत्वों का अभाव जैसी अनके समस्याएं भयंकर रूप में उपस्थित है। इन समस्याओं को दूर करने के लिए भारत में शिक्षा का पुर्नगठन करने की आवश्यकता है और शैक्षिक उद्देश्य उपनिषदकालीन शिक्षा से ग्रहण किए जा सकते हैं तथा पाठ्यक्रम में नैतिक, आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ समाजोपयोगी विषय सम्मिलित करने होंगे तथा शिक्षा आत्मनिर्भरतापूर्ण बनाने के लिए शिक्षा व्यवसायोन्मुखी बनानी होगी।

सन्दर्भ सूची

[1]. गुप्त, रामबाबू : 'भारतीय शिक्षा शास्त्री" रतन प्रकाशन मन्दिर,आगरा 1996

[2]. पाण्डेय, रामशक्ल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री' विनोद पुस्तकमन्दिर, आगरा, 1986

[3]. सिंह, राजेन्द्रपाल : राधाकृष्णन शिक्षाशास्त्री के रूप में', एशियन पत्लिशर्स, जालन्धर सिटी, 1968

[4]. आर्यनायकम् : "वर्तमान शिक्षा की गम्भीर स्थिति', हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा, 1954